

GEOGRAPHY

B.A.:- PART-I

PAPER - I

TOPIC :- आवासीय (FRONTS)

BY

DR. LALIT SAGAR

ASSOCIATE PROFESSOR

DEPARTMENT OF GEOGRAPHY

H.D. JAIN COLLEGE, ARA

VEER KUNWAR SINGH UNIVERSITY

वसाग्र (Fronts)

3

विपरीत ताप, आर्द्रतावाली विभिन्न दिशाओं से आती

हो परस्पर विरोधी वायु-राशियों के मध्य निर्मित, ठंडा, शुद्ध संकुचन-क्षेत्र में वसाग्र कूटते हैं। इस विषय विन्यास-तन्त्र के सहारे ऊष्ण, हल्की वायु ठंडी, भारी वायु राशि के ऊपर ^{ऊपर} उठती है या उठा दी जाती है। वसाग्र उत्पत्ति को इस प्रक्रिया को frontogenesis (लैटिन शब्द = वसाग्र निर्माण) कहते हैं। अतः frontogenesis के लिए दो विपरीत ताप, आर्द्रतावाली वायु-राशियों का अभिसरण आवश्यक है। वायु-अभिसरण के सहारे करण प्रति चुंबकीय दशा में वसाग्र नष्ट हो जाता है। बिना frontolysis कहते हैं। frontolysis शब्द लैटिन एवं ग्रीक शब्दों के योग से का है। जिसका अर्थ है 'वसाग्र क्षय'। निम्न दक्ष पेटियों वसाग्र-निर्माण एवं उच्च दक्ष पेटियों (वायु का अपसरण-क्षेत्र) वसाग्र क्षय के क्षेत्र हैं।

वसाग्र-निर्माण के लिए लक्षण - (a) विपरीत ताप-शुद्ध वायु-राशि ठंडी, भारी, शुद्ध और दूसरी उष्णार्द्र है। हल्की उष्णार्द्र वायु ठंडी, भारी वायु के ऊपर उठती है या उठा दी जाती है, जो वसाग्र कसा है।

(b) विपरीत दिशाओं की वायु का अभिसरण है।

विशेषताएं :-

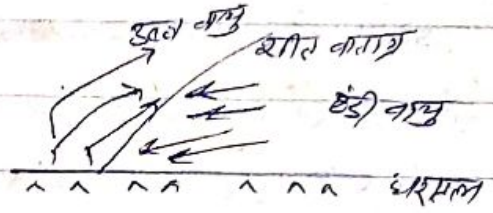
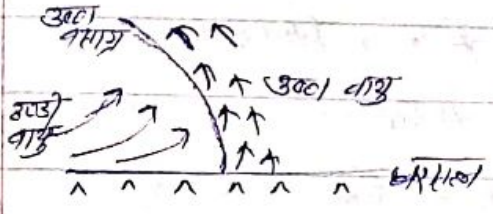
- (i) विपरीत दिशाओं के से आती ठंडी, शुद्ध, भारी एवं हल्की उष्णार्द्र धारें।
- (ii) नीचे ठंडी एवं ऊपर उष्ण दिशाओं के कारण तापीय मिलनेका
- (iii) 50-80 km/hr गति होती है।
- (iv) वसाग्र क्षेत्र में उष्ण वायु का ठंडी वायु के सहारे ऊपर उठने या उठा दिया जाते हैं बादल, वर्षा, ओस-भित्ति भी उत्पत्ति। उष्ण वसाग्र में विस्तृत क्षेत्र में दो सप्ताह तक वर्षा और शीत वसाग्र में ठंडी वायु द्वारा उष्णार्द्र वायु के अत्यास काफी ऊपर उठा दिया जाते हैं ठंडी दिशाओं और प्रायः प्रोसे, विपत्ती के साथ बालू असादी तक वर्षा
- (v) वसाग्र के गुजर जाने के बाद आकाश साफ।

(vi) नमनों का निर्माण धरती से प्रायः 3000 मीटर ऊंचाई पर, 5000 मीटर से ऊपर भी मिलकुण नही।

(vii) नमनों की चौं 5 से 8 km तक। (viii) निर्गल वायु हम वाली नमनों के भागों से नमनों की समताव रेखाओं में लीन जीह के कण स्थान (Nuclei) जैसी भावनी।

नमनों का वर्गीकरण

(A) उष्ण नमन (Warm front) → इस मंद ढाल वाले नमनों के सहारे ठंडी उष्ण, डलकी वायु, ठंडी, सूखा वायु पर आरुढ़ डीकर रहती है। ताप एवं वायु दम में बढ़ि हो जाती है। नमन ढाल 1:100 से 1:500 होता है।

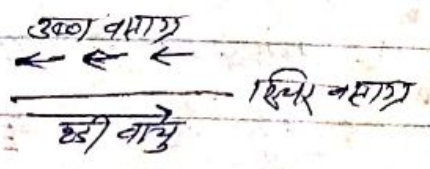


(B) (Cold front) शीम नमन → इस लश्कर शीम के सहारे ठंडी, भारी, वायु उष्ण, डलकी वायु की शक्ति ऊपर उठा देती है। ढाल 1:25 से 1:100 होता है। ताप में अचानक इंस हो जाता है।

(C) अभिसृष्टि या संकुच नमन (Occluded front) → इसमें शीम नमन लीमार्थ उष्ण नमन के सहारे मिल जाती है। ऊपर उठा दी गई वायु का खण्ड धरती के समतल हो जाता है।



(D) स्थायी नमन (Stationary front) → इसमें ठंडी एवं उष्ण वायु राशियों एक नमन के सहारे समानांतर रहने लगती है। वायु ऊपर नहीं उठती।



नमन - प्रेश

वायु राशियों के प्रसू के अघासि देगों के बीच में संक्रमण-क्षेत्र जहां दो निर्गल तापवली वायु-राशियों का अभिसरण होता है। प्रसूय नमन प्रेश है।

(1) ध्रुवीय वाताग्र-प्रदेश \rightarrow ध्रुवीय बंदी, भारी वायु एवं अल्प-अक्षांश की ओरला उच्च वायु दबाव रेखा से आती उल्का, इल्की वायु के अभिसरण से उच्च वाताग्र शक्ति में मध्य अक्षांशों में, अल्पतः अती अल्पतः, 30 प्रशांत के अर अक्षांश स्थित होती है।

(2) आर्कटिक वाताग्र प्रदेश \rightarrow यहां ध्रुवीय महादीपीय (P) एवं ध्रुवीय शारी (HP) उल्काओं के अभिसरण से उच्च वाताग्र क्षेत्रिया, 30 प्रशांत के 30 भागों में स्थित है। पर शरी वायु-राशियों ताप में विशेष अंतर नहीं होती है ये ये अती शक्ति नहीं होती है।

(3) अल्प उच्च अक्षांशीय वाताग्र-प्रदेश \rightarrow ध्रुवीय मिन दबाव रेखा (डिप्लू) में 50 एवं 60 व्यापारिक वायु के अभिसरण से वाताग्र उच्च इति है। वेध वाताग्र के स्थारे वायु ऊपर उठ कर पर्याप्त वर्षा करती है।

(4) शूमध्यसागरीय वाताग्र \rightarrow इसकी उत्पत्ति शूमवीय बंदी वायु से 30 अक्षांश. शूमध्यसागरीय उच्च वायु के अभिसरण से होती है। यह उच्च वाताग्र 30 के शरीया एवं अक्षांश के अती में दम में शीतकालीन वर्षा प्रदान करते है।

वाताग्र की संख्या \rightarrow वाताग्र की उत्पत्ति विभिन्न ताप वाली वायु-राशियों के अभिसरण से होती है। बंदी, भारी वायु-राशि के दाल वाताग्र-त्व के ऊपर उठना, इल्की वायु राशि बढ़ती है। वाताग्र-त्व कुछ कुछ और दाल ही जाता है।

वाताग्र-दम ऊँचाई एवं लेसिज दूरी का अनुपात होता है। इस अनुपात का अनुपात 1:160 से 1:500 तक होता है। ^{उच्च शक्त और} वायु-राशियों के ताप, अक्षांश में जितना अंतर होगा, वाताग्र की ताप उतनी ही अधिक होती। इसकी ताप 16 से 80 तक होती है।

वाताग्र और मौसम \rightarrow

(1) ताप \rightarrow वायु के अक्षर वाताग्र-प्रदेशों में ताप में अत्यंत परिवर्तन ही जाता है। उष्ण वायु-राशि के ऊपर गर्म वायु-राशि

